Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language,
Online ISSN 2348-3083, SJ IMPACT FACTOR 2017: 5.068, www.srjis.com
PEER REVIEWED JOURNAL, FEB – MAR, 2019, VOL- 7/32

महादेवी वर्मा के काव्य में स्त्री

मीनाक्षी
सहायक प्रवक्ता, जानकी देवी मेमोरियल कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली।

Scholarly Research Journal's is licensed Based on a work at www.srjis.com

महादेवी की करुणा अपने दुख से नही अपितु पीड़ित मानवता से उद्भूत हुई है। महादेवी अपनी करुणा को उद्भूत करके पीड़ित जगत की सेवा में सक्रिय होने के लिए प्रेरित करती है। महादेवी की कविता नारी ह्रदय की अभिव्यक्तियां हैं।
महादेवी के समग्र साहित्य में स्त्री मन की पीड़ा किसी न किसी रूप में उजागर होती है। महादेवी के काव्य में स्त्री के रूप में उनकी अपनी छवि, निज व्यक्तित्व - प्रेमिका, साधक और आत्मा के रूप में हमारे सामने उभरती है।

महादेवी की कविता समाज की दुरावस्था, असहाय नारी की विपन्न ,स्थिति व्यक्ति और समाज के परस्पर वैषम्य का आत्म केंद्रित निरूपण है। उनकी पराजित प्रतिक्रिया स्वरुप महादेवी का एकांत रूदन है । इसके ठीक विपरीत महादेवी जी का गद्य साहित्य मूलतः समाज केंद्रित है । कविता में उनके निजी जीवन की व्यथा है तो उनके गद्य में सामाजिक जीवन की। निजी जीवन की व्यथा का आधार भी सामाजिक होता है । महादेवी की कविता नारी ह्रदय की अभिव्यक्तियां हैं।

महादेवी के समग्र साहित्य में स्त्री मन की पीड़ा किसी न किसी रूप में उजागर होती है। महादेवी के गद्य साहित्य के अंतर्गत 'अतीत के चलचित्र' और 'स्मृति की रेखाएं' में महादेवी ने ऐसे पात्रों की छवि को उभारा है जो भारतीय गरिमा, निष्ठा नारी का प्रतिबंध है।महादेवी के गद्य में जहां लछमा, राधिया, बिंदा, भक्तिन, गुंगिया और बिबिया जैसी स्त्रियों की छवियां हमारे सामने उभरती हैं, वहीं महादेवी के काव्य में स्त्री के रूप में उनकी अपनी छवि, निज व्यक्तित्व - प्रेमिका, साधक और आत्मा के रूप में हमारे सामने उभरती है।
महादेवी के व्यक्तित्व के तीन रूप हैं - ममतामयी भारतीय नारी का, और जो बड़ो से छोटी बहन और छोटो से बड़ी बहन की तरह व्यवहार करती है । दूसरा राष्ट्र की मेधाविनी नारी का, जिसके विचारों में दृढ़ता और वाणी में अपूर्व तेज है तीसरा रहस्य कल्पना ओके भाव प्रवण कवयित्री का, जिसने मधुरतम छायावादी गीतों की सृष्टि की है।

Copyright © 2019, Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language

"विरह का जलजात जीवन
विरह का जलजात
वेदना में जन्म-जन्म करुणा में मिला आवास ।"

इस गीत में व्यक्तिगत सुख-दुख, (स्त्री मन की पीड़ा) के साथ-साथ विश्व की दशा का चित्रण हुआ है। " स्त्री अपने आसपास की दुनिया को किस रूप में देखती है और उसे किन किन रूपों में पाना चाहती है, इस प्रश्न का जवाब महादेवी के गीत अभिव्यक्त करते हैं ।"

महादेवी के 'उस पार' का रहस्य अन्य कवियों के 'उस पार' के रहस्य से कुछ भिन्न है ।

"तोड़ दो यह क्षितिज मैं देख लूं उस ओर क्या है?"

इस पंक्ति में क्षितिज विधि निषेध की अजगर कुंडली है जिसमें स्त्री कसकर बंधी है। महादेवी ने उसी को तोड़ने की आकांक्षा व्यक्त की है।

महादेवी की 'बदली' भारतीय स्त्री की आत्मकथा बन गई है ।

मैं नीर भरी दुख की बदली
विस्तृत नभ का कोई कोना
मेरा ना कभी अपना होना
परिचय इतना इतिहास यही
उमड़ी कल थी मिट आज चली ।

स्त्री की कोई स्वानुभूति इससे अधिक मार्मिक नहीं हो सकती । इस गीत में महादेवी ने अपने सजल करुणामय जीवन की तुलना 'पावस की बदली' से की है । इस गीत में महादेवी की पीड़ा उनकी निजी पीड़ा ही नहीं है बल्कि वह भाव प्रवण का प्रतिनिधित्व करती है ।

महादेवी का अश्रु स्त्री के सीमाबद्ध जीवन का बिम्ब है । यह वर्तमान जीवन का यथार्थ है।
महादेवी कहती है _

"अश्रु चुनता दिवस इसका अश्रु गिनती रात"
अर्थात उनका जीवन वेदना और आंसुओं से ही घिरा रहता है।

Copyright © 2019, Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language

महादेवी के पहले कविता संग्रह नीहार से ही स्पष्ट हो चुका था कि महादेवी का 'अश्रु' रोने गाने का मसला नहीं है अपितु वह एक नए संसार के लिए पैदा हो चुकी तड़प है।

"करे दृग आंसू का व्यापार
अनोखा एक नया संसार"

महादेवी के अनुसार वर्तमान संसार असह्य है इसलिए वह एक नया संसार चाहती हैं। वर्तमान संसार में बंधन ही बंधन है इसलिए एक नया संसार चाहती हैं जिसमें कोई बंधन ना हो।
महादेवी का जीवन विद्रोही स्त्री का जीवन था। महादेवी ने अपने बाल - विवाह को नहीं माना, पति के घर जाने से इनकार किया, उन्होंने लेखन, स्वाधीनता आंदोलन, संग्राम और स्त्री शिक्षा में हिस्सा लिया। वे निडर होकर पुरुषों के क्षेत्र में गईं। उन्हें कोई निजी दुख नहीं था पर उनके भीतर एक साधारण स्त्री अंधेरे में रो रही थी ।

महादेवी का जीवन एक साधक का जीवन है । वे अपने संपूर्ण जीवन में साधना ही करती रही । महादेवी कहती हैं -

"मधुर - मधुर मेरे दीपक जल
युग - युग प्रतिदिन, प्रतिक्षण प्रतिपल आलोकित कर।"

इस गीत में महादेवी वर्मा अपने जीवन को एक दीपक के रूप में कल्पित करती हैं और दीपक के समान ही वे अपने जीवन को मनुष्य जाति की सेवा में निरंतर जलाए रखना चाहती हैं।

महादेवी वर्मा मूलतः प्रेम और करुणा की कवयित्री हैं । उनके प्रेम का आलंबन असीम और अलौकिक है । प्रिया (महादेवी) का जीवन सीमाबद्ध है । उस सीमा के कारण उन्हें प्रियतम का वियोग झेलना पड़ता है । किंतु कवयित्री इस बात से संतुष्ट है कि उनके प्राणों का स्पंदन ही प्रिय का संदेश लाने वाला दूत है।सांध्य गगन के विभिन्न रंगों से युक्त महादेवी के जीवन में जहां प्रणय की अरुणिमा है, विषाद की नीलिमा है वहीं आशा का संचार करने वाला सुनहलापन भी है। उनका अनुराग प्रिय के लिए है किंतु जीवन की सारी करुणा संतृप्त जगत के लिए है।

जीवन का क्रंदन देखकर, कवयित्री विचलित हो जाती है। वह अपने मधुर संगीत से दुख को सुख, मरू को उर्वर बना देने की कामना करती है। प्रियतम के प्रेम में मतवाली कवयित्री को प्रतिदान स्वरूप केवल विरह वेदना ही मिली। प्रणय आकांक्षाएं अतृप्त रह गई। 'नीर भरी बदली' बनकर रोटी हुई 'दीप से मन को जलाती' वह प्रतीक्षा करती रही ।

Copyright © 2019, Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language

विरह व्यथित व्याकुल अंतर की एक ही पुकार शेष रह गई ।-

" जो तुम आ जाते एक बार
कितनी करुणा कितने संदेश
पथ में बिछ जाते बन पराग। "

महादेवी की असीम करुणा लोकव्यापी है। अपने जीवन के अणु- अणु को गलाकर आत्म त्याग के द्वारा वे अपरिमित सौरभ और प्रकाश का प्रसार करना चाहती हैं । इस दिशा में दीपक उनका आदर्श है। उसी से प्रेरणा पाकर कामना करती हैं-
"मधुर- मधुर मेरे दीपक जल"

महादेवी की करुणा अपने दुख से नही अपितु पीड़ित मानवता से उद्‌भूत हुई है। महादेवी अपनी करुणा को उद्‌भूत करके पीड़ित जगत की सेवा में सक्रिय होने के लिए प्रेरित करती है।

महादेवी की कविता जिस 'नारी' की आत्माभिव्यक्ति है उसके लिए जीवन एक 'पथ' है । एक अनवरत 'साधना'। इस पथ पर उसके पथ अग्रसर हैं । और उसके प्राण साधनारत। महादेवी की कविता व्यक्ति प्रधान है उसमें अहम का महत्व सबसे अधिक है । महादेवी अपनी कविता में सबसे अधिक अपने बारे में ही कहती हैं । उनकी कविता में उनका निजी संसार ही प्रधान है । महादेवी के काव्य में एक नारी के मिलन और विरह की साधना ही मुख्य है।

महादेवी जी का सबसे दुख और दर्द बांटने को आतुर हैं, इसी में वे कवि का मोक्ष मानती हैं। करुणा के सात्विक आलोक से उनकी आत्मा दीप्तिपूर्ण हो उठी है। अतः वह संपूर्ण विश्व के प्रति संवेदनशील हो उठी हैं। वह मानव शरीर को ही मंदिर मानती हैं और उसी में प्रभु की प्रतिमा प्रतिष्ठित कर उसकी आराधना करती हैं ।

"क्या पूजा क्या अर्चना रे?
उस असीम का सुंदर मंदिर
मेरा लघुतम जीवन रे ।
मेरी श्वासें करती रहती
नित प्रिय का अभिनंदन रे ।"

महादेवी की कविताओं में उनका व्यक्तिगत स्पष्ट झलकता है। कहीं कहीं उनकी व्यक्तिगत खीझ, निराशा और उपालंभ के स्वर स्पष्ट ध्वनित हुए हैं, जैसे सूखे सुमन में -

Copyright © 2019, Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language

"कौन रोएगा सुमन
हमसे मनुज नि:सार को?"

महादेवी के व्यक्तित्व की मूल विशेषता वेदना ही है। उन्होंने विश्व वेदना में अपनी वेदना को मिलाकर देखा है क्योंकि उनको विश्वास है कि उसी के द्वारा कवि अपना कर्तव्य पूरा कर सकता है । महादेवी की कविता का मुख्य स्वर वेदना है पर इस वेदना का उत्स क्या है? इस विषय पर महादेवी ने लिखा है,
"संसार जिसे दु:ख और अभाव के नाम से जानता है वह मेरे पास नहीं है। जीवन में मुझे बहुत दुलार, बहुत आदर और बहुत मात्रा में सब कुछ मिला है । उस पर पार्थिक दु:ख की छाया नहीं पड़ी । कदाचित यह उसी की प्रतिक्रिया है कि वेदना मुझे इतनी मधुर लगने लगी ।"

स्पष्ट है कि कवयित्री ने वेदना का उत्स सुख की प्रतिक्रिया को माना है।

"धूप सा तन दीप सी मैं" गीत में महादेवी कहती है जिस प्रकार दीपक स्वयं जलता है उसका तेल बूंद-बूंद कर चुकता जाता है, पर वह दूसरों को आलोक प्रदान करता है, इसी प्रकार साधना के प्राण साधना में तिल - तिल क्षीण होते चले जाते हैं पर वह उसकी चिंता ना कर दूसरों का कल्याण करता रहता है । उसकी आत्मा की ज्योति दूसरों को प्रकाश प्रदान करने में अपनी सार्थकता मानती है । साधक अपने आंसुओं से कल्याण का सृजन करता है उसी प्रकार महादेवी भी अपने जीवन रूपी दीपक को प्रज्वलित कर मनुष्य जाति की सेवा में स्वयं को निरंतर जलाए रखना चाहती हैं।

महादेवी का संदेश भी है कि जिस तरह छोटा सा सुमन झड़कर सारे वातावरण को सुरभित कर देता है, जिस प्रकार लघु दीपक अपने ज्वालामय जीवन को संसार का तिमिर नष्ट करने के लिए समर्पित कर देता है उसी प्रकार क्षणभंगुर जीवन को समाज सेवा के लिए समर्पित कर देना चाहिए ।
अंत में कहा जा सकता है कि महादेवी की कविता नारी- हृदय की अभिव्यक्तियां हैं। महादेवी की कविता जिस स्त्री की आत्माभिव्यक्ति है उसके लिए जीवन एक पथ है - एक अनवरत साधना और महादेवी इसी पथ पर निरंतर अग्रसर रही हैं।

संदर्भ ग्रंथ

यामा, महादेवी वर्मा, पृष्ठ ६२
महादेवी की कविता का नेपथ्य, विजय बहादुर सिंह, पृष्ठ १
महादेवी और उनकी परिक्रमा, पृष्ठ २५२
यामा, महादेवी वर्मा, पृष्ठ ८३
यामा, महादेवी वर्मा, पृष्ठ १४०
यामा, महादेवी वर्मा, पृष्ठ ८५
महादेवी वर्मा का काव्य, डॉ राधिका सिंह, पृष्ठ १२२

Copyright © 2019, Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language

महादेवी डॉक्टर इंद्रनाथ मदान पृष्ठ ८१
निहार महादेवी वर्मा पृष्ठ ७०
महादेवी रचना संचयन विश्वनाथ प्रसाद पृष्ठ ११
नीरजा महादेवी वर्मा पृष्ठ १७०
अतीत के चलचित्र महादेवी वर्मा पृष्ठ २५

Copyright © 2019, Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language